नईदुनिया

भोपाल, 14 जून 2026

# प्राचीन मिस्री मकबरे से मिला लगभग 3,000 वर्ष पुराना शहद

काहिरा

प्राचीन मिस्री मकबरे से शोधकर्ताओं को लगभग 3,000 वर्ष पुराना शहद मिला है। हजारों साल गुजरने के बावजूद यह शहद आज भी सुरक्षित और खाने योग्य पाया गया है। असाधारण खोज का इतिहास वर्ष 1922 से जुड़ा है, जब पुरातत्वविद् हावर्ड कार्टर और उनकी टीम ने मिस्र के प्रसिद्ध शासक तूतनखामुन के मकबरे को खोला था। खुदाई के दौरान उन्हें संगमरमर और मिट्टी के कई जार मिले, जिनमें गाढ़े अंबर रंग का शहद भरा हुआ था। यह खोज न केवल प्राचीन मिस्र की उन्नत संरक्षण तकनीकों को दर्शाती है, बल्कि मधुमक्खियों द्वारा निर्मित शहद की अनूठी रासायनिक संरचना को भी उजागर करती है। यह शहद लगभग 1323 ईसा पूर्व का माना गया। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए परीक्षणों में पाया गया कि हजारों वर्ष पुराना होने के बावजूद यह शहद खराब नहीं हुआ था और उसकी मिठास भी बरकरार थी। विशेषज्ञों के अनुसार, शहद के लंबे समय तक सुरक्षित रहने के पीछे उसकी प्राकृतिक रासायनिक संरचना जिम्मेदार है। सबसे पहले, शहद में पानी की मात्रा अत्यंत कम होती है। मधुमक्खियां फूलों से रस लाने के बाद उसमें मौजूद अतिरिक्त पानी को कम कर देती हैं, जिससे बैक्टीरिया और फफूंद के पनपने की संभावना लगभग समाप्त हो जाती है। शहद में मौजूद अत्यधिक मात्रा में फ्रक्टोज और ग्लूकोज सूक्ष्म जीवों के लिए प्रतिकूल वातावरण तैयार करते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण शहद का अम्लीय स्वभाव है। इसका पीएच स्तर लगभग 4 होता है, जो कई हानिकारक बैक्टीरिया के लिए अनुकूल नहीं माना जाता। मधुमक्खियों द्वारा उत्पन्न विशेष एंजाइम ग्लूकोज को ग्लूकोनिक अम्ल में बदल देते हैं, जिससे शहद की अम्लता बढ़ जाती है और सूक्ष्म जीवों की वृद्धि रुक जाती है। तीसरा और सबसे प्रभावशाली तत्व हाइड्रोजन पेरोक्साइड का निर्माण है। यह वही रसायन है जिसका उपयोग एंटीसेप्टिक के रूप में किया जाता है। शहद में मौजूद एंजाइम समय-समय पर इसकी थोड़ी मात्रा उत्पन्न करते रहते हैं, जिससे उसमें जीवाणुरोधी गुण बने रहते हैं। यही कारण है कि प्राचीन सभ्यताओं में शहद का उपयोग घावों और जलन के उपचार के लिए भी किया जाता था। शहद को सुरक्षित रखने में प्राचीन मिस्रवासियों की संरक्षण पद्धति ने भी अहम भूमिका निभाई। वे शहद को मोटी दीवार वाले मिट्टी के बर्तनों में भरकर उन पर मोम या रेजिन की परत चढ़ाते थे और फिर उन्हें पूरी तरह सील कर देते थे। इन जारों को पिरामिडों और चूना पत्थर से बनी ठंडी, सूखी तथा अंधेरी संरचनाओं में रखा जाता था, जहां तापमान और नमी में बहुत कम बदलाव होता था। इस स्थिर वातावरण ने शहद को हजारों वर्षों तक सुरक्षित बनाए रखा। हाल के अध्ययनों से यह भी पता चला है कि समय के साथ शहद के कुछ औषधीय गुण कमजोर पड़ सकते हैं, लेकिन वह जहरीला नहीं बनता। वैज्ञानिकों का कहना है कि पुराने शहद में कुछ एंजाइमों की सक्रियता कम हो सकती है, जिससे उसके जीवाणुरोधी गुण घट जाते हैं। इसके बावजूद उसकी अम्लीय प्रकृति और सूक्ष्म जीवों को नष्ट करने वाली क्षमता काफी हद तक बनी रहती है।

## न्यूज ब्रीफ

### 10 सालों में समुंद्र का सी लेवल हुआ डबल, इंसानी गलतियों ने किया तबाह

**वाशिंगटन।** संयुक्त राष्ट्र की नई वर्ल्ड ओशियन असेसमेंट रिपोर्ट ने दुनिया की नींद उड़ा दी है। समुंद्र पहले से कहीं ज्यादा बड़े खतरे में है। पिछले 10 सालों में समुंद्र का सी लेवल बढ़ने की रफ्तार डबल हो गई है। इंसान की गलतियों ने समुंद्र को तबाह कर दिया है। पलूशन और बड़े लेवल पर हो रही इंडस्ट्रियल फिशिंग इसका मेन कारण है। रिपोर्ट के मुताबिक समुंद्र का इकोसिस्टम बहुत ज्यादा प्रेशर झेल रहा है। बायोडायवर्सिटी लगातार खत्म हो रही है। 86 देशों के 600 से ज्यादा साइंटिस्ट ने यह रिपोर्ट तैयार की है। 2021 से 2025 तक समंदर की हेल्थ को इसमें स्टडी किया गया है। इससे पहले 2018 की रिपोर्ट में भी मरीन एनवायरमेंट को हुए नुकसान की बात कही गई थी। साइंटिस्ट का कहना है कि इंसान ने समुंद्र को डस्टबिन बना दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक 2015 से पहले समुंद्र का पानी हर साल 2 मिलीमीटर बढ़ता था। 2023 में यह स्पीड बढ़कर 4.3 मिलीमीटर हो गई है। इसका सीधा मतलब है कि सी लेवल राइज डबल हो चुका है। पानी का गर्म होना भी एक बड़ा खतरा है। 1955 के बाद से समुंद्र जितना गर्म हुआ है, उसका 16 फीसदी हिस्सा सिर्फ 2018 के बाद रिकार्ड हुआ है। अटलांटिक ओशियन के साथ इंडियन ओशियन और पैसिफिक ओशियन के दक्षिणी हिस्से सबसे ज्यादा गर्म हो रहे हैं। वैज्ञानिक मानते हैं कि हम समुंद्र के बारे में बहुत कम जानते हैं। 2025 तक समुंद्र के सिर्फ 27 फीसदी हिस्से का ही मैप तैयार हो पाया है। समंदर का बहुत बड़ा हिस्सा आज भी एक रहस्य बना हुआ है। डीप सी इकोसिस्टम को समझना अभी भी वैज्ञानिकों के लिए चैलेंज है।

### आफिस रोमांस दर्शकों के बीच नंबर वनः जेनिफर लोपेज

**लास एंजेलस।** अपनी आगामी फिल्म आफिस रोमांस को लेकर हालीवुड की मशहूर अभिनेत्री और बहुमुखी गायिका जेनिफर लोपेज सुर्खियों में हैं। जेनिफर लोपेज ने हाल ही में इस फिल्म की शूटिंग और अपने को-स्टार ब्रेट गोल्डस्टीन के साथ काम के अनुभव को लेकर एक पोस्ट साझा किया। अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर जेनिफर लोपेज ने कुछ तस्वीरें पोस्ट कीं, जिनमें वह अपने को-स्टार ब्रेट गोल्डस्टीन के साथ नजर आ रही हैं। इन तस्वीरों में दोनों की आन-स्क्रीन केमिस्ट्री और आपसी तालमेल साफ दिखाई दे रहा था। इन तस्वीरों के साथ उन्होंने इंस्टाग्राम पर एक लंबा और हर्टफेल्ट कैप्शन भी लिखा। जेनिफर ने लिखा, यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि आफिस रोमांस दर्शकों के बीच नंबर वन पर है। ब्रेट गोल्डस्टीन का विशेष धन्यवाद, वह किसी भी अभिनेत्री के लिए सबसे बेहतरीन लीडिंग मैन हैं, जिसकी कोई भी उम्मीद कर सकता है। उनके साथ काम करना एक शानदार अनुभव रहा, और मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हूं कि मुझे उनके साथ स्क्रीन साझा करने का मौका मिला। इसके अलावा, जेनिफर लोपेज ने फिल्म के निर्देशक ओल पार्कर की भी तारीफ की और उन्हें एक शानदार और दूरदर्शी निर्देशक बताया। उन्होंने कहा, फिल्म को जिस तरह से पर्दे पर उतारा गया है, उसमें कड़ी मेहनत साफ झलकती है और पूरी टीम ने मिलकर इसे खास बनाया है।

### मिडिल ईस्ट जंग पर 39 बार झूठा दावा कर चुके डोनाल्ड ट्रंप ने किया ऐलान

**तेहरान/वाशिंगटन।** अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे संघर्ष को लेकर एक बड़ा घटनाक्रम सामने आया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि अमेरिका ने ईरान के खिलाफ युद्ध खत्म कर दिया है। हालांकि ईरान ने इस दावे की पुष्टि नहीं की है और कहा है कि अभी तक कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है। राष्ट्रपति ट्रंप ने जार्जिया में एक चुनावी रैली को वर्चुअल तरीके से संबोधित करते हुए कहा कि अमेरिका ने ईरान के साथ युद्ध बंद कर दिया है। उन्होंने यह भी दावा किया कि ईरान इस बात पर सहमत हो गया है कि वह कभी परमाणु हथियार नहीं बनाएगा। सोशल मीडिया पर किए गए अपने पोस्ट में राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि ईरान के साथ बातचीत ईरानी नेतृत्व के सर्वोच्च स्तर तक पहुंच चुकी है और उसे मंजूरी मिल गई है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति के तौर पर उन्होंने ईरान के खिलाफ तय हमले और बमबारी को रद्द कर दिया है। राष्ट्रपति ट्रंप के मुताबिक, बातचीत के प्रमुख बिंदुओं को अमेरिका, इजरायल, सऊदी अरब, यूएई, कतर, तुर्की, पाकिस्तान, बहरीन, कुवैत, जार्डन, मिस्र और अन्य संबंधित पक्षों ने मंजूरी दे दी है। उन्होंने यह भी कहा कि समझौता पूरी तरह तय होने तक नौसैनिक नाकेबंदी जारी रहेगी और हस्ताक्षर की जगह और समय की घोषणा जल्द की जाएगी। इस बीच कई रिपोर्टों में दावा किया गया है कि ट्रंप के इस ऐलान से इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भी हैरान रह गए। रिपोर्टों के मुताबिक, ट्रंप ने युद्ध बंद करने के फैसले की जानकारी पहले से इजरायल को नहीं दी थी। कहा जा रहा है कि अगर यह डील लागू होती है तो इजरायल को लेबनान में अपने सैन्य अभियान पर असर पड़ सकता है।

# इंडोनेशिया खरीद रहा दक्षिण कोरिया का चियोंगुंग-2 सिस्टम

**चीन को देगा मुंहतोड़ जवाब, यह दुश्मन के विमानों, क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराने में है सक्षम**

जकार्ता

**दक्षिण चीन सागर में इंडोनेशिया अपनी सैन्य ताकत बढ़ा रहा है। इसके लिए इंडोनेशिया भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने की तैयारी कर रहा है। इसके अलावा उसने दक्षिण कोरिया की एमएसएएम-2 चियोंगुंग-2 सिस्टम की खरीद को हरी झंडी दे दी है। चियोंगुंग-2 दक्षिण कोरिया की उन्नत, मध्यम-दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली है। इसे केएम-एसएएम ब्लाक 2 भी कहा जाता है। इसे खास तौर पर चीनी क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों, लड़ाकू विमानों और ड्रोन को नष्ट करने के लिए तैनात किया जाएगा।**

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इंडोनेशिया के रक्षा मंत्रालय की लाजिस्टिक्स एजेंसी ने 18 मई 2026 को चियोंगुंग-2 मिसाइल सिस्टम बनाने वाली एलआईजी नेक्स1 की सहायक कंपनी एलआईजी डिफेंस एंड एयरोस्पेस को औपचारिक रूप से लेटर आफ इंट्रेस्ट जारी किया था। हालांकि, यह पत्र बाध्यकारी नहीं है कि इंडोनेशिया इसे खरीदे ही। यह डील बहुत कुछ फाइनेंसिंग की मंजूरी, पेमेंट और परफार्मेंस की गारंटी पर निर्भर है, लेकिन यह दिखाता है कि इंडोनेशिया मध्यम दूरी के एयर डिफेंस सिस्टम की कमी को दूर करना चाहता है। ऐसे डिफेंस सिस्टम की कमी की वजह से इंडोनेशिया में अहम बुनियादी ढांचे और समुद्री व्यापार मार्गों के अहम बिंदुओं पर खतरा बना रहता है।

रिपोर्ट के मुताबिक प्रस्तावित खरीद पैकेज में एंगेजमेंट कंट्रोल स्टेशन, मल्टी-फंक्शन रडार, वर्टिकल लान्च सिस्टम, ट्रांसपोर्टर-इरेक्टर-लान्चर, मिसाइल ट्रांसलोडर वाहन, स्पेयर पार्ट्स की इन्वेंट्री, तकनीकी दस्तावेज, इंटीग्रेटेड लाजिस्टिक्स सपोर्ट और टेक्नोलाजी-ट्रांसफर की व्यवस्था शामिल है। इन्हें इंडोनेशिया के घरेलू रक्षा-औद्योगिक इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए तैयार किया गया है। चियोंगुंग-2 सिस्टम को अपनाने का इंडोनेशिया का फैसला एक कई स्तरों वाले इंटीग्रेटेड एयर-एंड-मिसाइल डिफेंस सिस्टम को बनाने से संबंधित है, जो बैलिस्टिक मिसाइलों, क्रूज मिसाइलों, लोइटरिंग म्यूनिशन, ड्रोन और लंबी दूरी के सटीक हमले वाले प्लेटफार्म को मार गिरा सके। इंडोनेशिया मलक्का जलडमरूमध्य और सुंडा जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक जलमार्गों की सुरक्षा को लेकर भी चिंतित है।

उसे डर है कि होर्मुज की तरह यहां भी खतरा पैदा हो सकता है। अगर मलक्का या सुंडा जलडमरूमध्य में रुकावट आती है तो इसके पूरे इंडो-पैसिफिक समुद्री व्यापार नेटवर्क पर गंभीर सैन्य और आर्थिक परिणाम हो सकते हैं। इंडोनेशिया 17,000 से ज्यादा द्वीपों में फैला है, जिससे यहां रडार कवरेज, फाइटर इंटरसेप्शन कोआर्डिनेशन और सतह-से-हवा में मार करने वाली मिसाइलों की तैनाती करना काफी जटिल है। इससे ऐसी कमियां पैदा हुई हैं जिनका फायदा उठाया जा सकता है। यही कारण है कि इंडोनेशिया अपनी सुरक्षा को चाक चौबंद बनाना चाहता है।

चियोंगुंग-2 ने संयुक्त अरब अमीरात में ईरानी बैलिस्टिक मिसाइलों और ड्रोन हमलों के खिलाफ 96फीसदी की प्रभावशाली इंटरसेप्शन रेट हासिल की है। चियोंगुंग-2 सिस्टम दुश्मन के विमानों, क्रूज मिसाइलों और बैलिस्टिक मिसाइलों को मार गिराने में पूरी तरह सक्षम है। चियोंगुंग-2 सिस्टम में 360-डिग्री कवरेज वाला उन्नत मल्टी-फंक्शन रडार और वर्टिकल कोल्ड-लान्च प्रणाली है, जो सभी दिशाओं से आने वाले खतरों से सुरक्षा देती है। चियोंगुंग-2 सिस्टम अमेरिकी पैट्रियट सिस्टम की तुलना में ज्यादा किफायती होने से कई देशों की पहली पसंद बनती जा रही है।

# भारत से सीधा मुकाबला नहीं: पाकिस्तानी एक्सपर्ट ने परमाणु धमकी को बताया डर का नतीजा

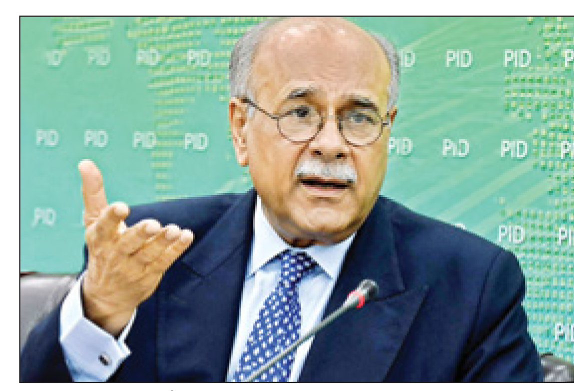


कराची

भारत के खिलाफ अपनी रणनीतियों के लगातार विफल होने और संभावित गंभीर परिणामों का एहसास होने के बाद, पाकिस्तान में अब नई सोच उभर रही है। पाकिस्तानी विशेषज्ञ अपने सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व को भारत से सीधे टकराव से बचने की सलाह दे रहे हैं, क्योंकि उन्हें समझ आ गया है कि भारत को घायल करने की कोई भी चाल अब उन पर ही भारी पड़ेगी।

पाकिस्तान के वरिष्ठ पत्रकार नजम सेठी ने हाल ही में इस बदलते रुख को स्पष्ट किया। उन्होंने चेतावनी दी कि यह बहुत बचकाना होगा कि किसी एक हमले के जवाब में पाकिस्तान अपने लड़ाकू विमान भारत पर हमला करने भेज दें। सेठी ने भारत पर अफगानिस्तान के रास्ते पाकिस्तान में अस्थिरता फैलाने का आरोप लगाकर सुझाव दिया कि पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने इस मुद्दे को गंभीरता से उठाना चाहिए। उन्होंने पाकिस्तान को डोजियर तैयार करने की सलाह दी, जिसमें भारत द्वारा अफगानिस्तान के माध्यम से आतंकवाद को बढ़ावा देने के सबूत शामिल हों। सेठी का मानना है कि आज जो माहौल है, उसके अंदर यह बहुत बड़ा मुद्दा बन सकता है और विश्व की राजधानियों में यह बात गूंजनी चाहिए। उनका दावा था कि भारत के साथ दुनिया का रोमांस अब खत्म हो रहा है, जिससे पाकिस्तान की बात सुनने के लिए वैश्विक समुदाय अधिक तैयार होगा। हालांकि, सेठी ने भारत के साथ सीधे युद्ध के प्रति आगाह किया, क्योंकि उनके अनुसार इससे पाकिस्तान पर बहुत जल्दी परमाणु दबाव आ जाएगा। उन्होंने पाकिस्तान की परमाणु नीति का जिक्र कर कहा कि इसमें स्पष्ट है कि यदि पाकिस्तान के अस्तित्व को खतरा होता है, तब वह परमाणु विकल्प का इस्तेमाल करेगा। सेठी ने तर्क दिया कि यही कारण है कि पाकिस्तान ने कभी भी पहले परमाणु हथियार का उपयोग न करने की नीति को नहीं अपनाया, जबकि दुनिया के अन्य परमाणु शक्तियों ने इस स्वीकार किया है। यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि पाकिस्तान की बार-बार की परमाणु धमकी दरअसल भारत के साथ संभावित युद्ध में अपनी निश्चित हार के डर को दर्शाती है।

## पूर्व राष्ट्रपति को 30 साल अतिरिक्त जेल

**सियोल।** दक्षिण कोरिया की सियोल जिला अदालत ने पूर्व राष्ट्रपति यून सुक योल को उत्तर कोरिया में ड्रोन भेजकर तनाव भड़काने के मामले में 30 साल अतिरिक्त जेल की सजा सुनाई है। अदालत ने माना कि इस अभियान का मकसद उत्तर कोरिया को उकसाकर आपात स्थिति पैदा करना और बाद में मार्शल ला लागू करने के लिए माहौल तैयार करना था। अदालत ने यून सुक योल, पूर्व रक्षा मंत्री किम योंग-ह्यून, डिफेंस काउंटर इंटेलिजेंस कमांड के पूर्व प्रमुख यो इन-ह्युंग और ड्रोन आपरेशन कमांड के पूर्व प्रमुख किम योंग-डे को देशद्रोह और सत्ता के दुरुपयोग का दोषी ठहराया। अदालत ने कहा कि इन अधिकारियों ने सैन्य अभियान की आड़ में उत्तर कोरिया को उकसाया, जिससे दोनों देशों के बीच सैन्य संघर्ष का खतरा बढ़ गया।

# जहरीला पक्षी हूडेड पिटोहुई को छूने से जा सकती है जान

लंदन

क्या आप जानते हैं कि दुनिया में एक ऐसा पक्षी भी है जिसे छूना इंसानों के लिए जानलेवा साबित हो सकता है इस पक्षी को दुनिया का सबसे विषैला पक्षी माना जाता है। यह अनोखा और बेहद जहरीला पक्षी है हूडेड पिटोहुई, जो मुख्य रूप से न्यू गिनी के घने जंगलों में पाया जाता है। इस रहस्यमयी पक्षी की खोज 1980 के दशक में वैज्ञानिक जैक डंबाचर ने की थी। वे न्यू गिनी में अपने फील्डवर्क के दौरान थे, जब उन्होंने पहली बार इस पक्षी को पकड़ा। पक्षी को छूने के कुछ ही क्षणों बाद, जैक डंबाचर को अपने हाथों, आंखों और मुंह में एक तीखी जलन, झुनझुनी और सुन्नपन महसूस होने लगा। शुरुआती तौर पर उन्हें समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हो रहा है, लेकिन बाद में गहन जांच और शोध के बाद यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि इस पक्षी की त्वचा और पंखों में जानलेवा जहर मौजूद होता है। एक शोध रिपोर्ट में, जैक डंबाचर और उनकी टीम ने बताया कि हूडेड पिटोहुई के शरीर में बैट्राकोटाक्सिन नामक एक अत्यंत खतरनाक जहर पाया जाता है। यह वही शक्तिशाली टाक्सिन है जो कुछ बेहद विषैले मेंढकों में भी मिलता है। यह जहर पक्षी को अपने शिकारियों और परजीवियों से बचाने में एक प्रभावी सुरक्षा कवच का काम करता है। अगर कोई शिकारी इस पक्षी को खाने का प्रयास करता है, तो उसे इस जहर से गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, या उसकी जान भी जा सकती है।

इस खोज का सबसे हैरान करने वाला पहलू यह था कि हूडेड पिटोहुई स्वयं अपने शरीर में इस जहर का निर्माण नहीं करता। वैज्ञानिकों के अनुसार, यह पक्षी अपनी विशेष आहार प्रणाली के माध्यम से यह जहर प्राप्त करता है। यह मेलिरिड बीटल्स नामक जहरीले कीड़ों को खाता है, जिनमें प्राकृतिक रूप से बैट्राकोटाक्सिन मौजूद होता है। इन जहरीले कीड़ों को खाने के बाद, यह टाक्सिन धीरे-धीरे पक्षी की त्वचा और पंखों में जमा हो जाता है, जिससे पक्षी खुद जहरीला बन जाता है। हूडेड पिटोहुई के चमकीले काले और नारंगी रंग भी एक खास उद्देश्य पूरा करते हैं। इस घटना को अपोसेमेटिज्म कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि ऐसे चमकीले और विशिष्ट रंग अन्य जीवों को चेतावनी देते हैं कि यह प्राणी खतरनाक या जहरीला हो सकता है। यही कारण है कि न्यू गिनी के स्थानीय आदिवासी और समुदाय के लोग इस पक्षी से हमेशा दूरी बनाए रखते हैं। वहां के लोग इसे अक्सर रबिश बर्ड यानी बेकार पक्षी भी कहते हैं, क्योंकि यह उनके लिए किसी काम का नहीं और छूने से भी खतरा है। वैज्ञानिक समुदाय का मानना है कि दुनिया में ऐसे पक्षी बेहद कम हैं जो अपनी आत्मरक्षा के लिए जहर का उपयोग करते हैं। यही कारण है कि हूडेड पिटोहुई आज भी वैज्ञानिकों और वन्यजीव प्रेमियों के लिए गहन अध्ययन और आश्चर्य का विषय बना हुआ है।

# आधुनिक डीएनए तकनीक ने ढूंढ निकाला भूतिया टेंट का सच

वाशिंगटन

अमेरिका के वाशिंगटन स्थित ओलंपिक नेशनल पार्क के घने जंगलों में 26 साल तक एक ऐसा राज दफन रहा, जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया है। एक बेहद सुनसान इलाके में पड़े पुराने टेंट के भीतर, स्लीपिंग बैग के अंदर मिला इंसानी कंकाल आखिर किसका था, यह सवाल दो दशकों से अधिक समय तक पुलिस, वैज्ञानिकों और परिजनों के लिए एक अबूझ पहेली बना रहा। अब आधुनिक फारेंसिक विज्ञान और डीएनए तकनीक ने इस गहरे रहस्य से पर्दा उठा दिया है। यह पूरी घटना किसी हालीवुड थ्रिलर फिल्म की तरह नजर आती है, जहां जंगल के बीचों-बीच एक टेंट में सोया हुआ इंसान फिर कभी जाग ही नहीं सका। इतने वर्षों तक इस बात का सुराग न मिल पाना कि उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ था, लोगों में कौतूहल और डर दोनों पैदा कर रहा था। यह मामला सिर्फ एक लावारिस शव की पहचान का नहीं है, बल्कि उस असहनीय दर्द का भी है जिसे

एक परिवार ने ढाई दशक से ज्यादा समय तक सीने में दबाए रखा। हाल ही में पार्क प्रशासन ने आधिकारिक खुलासा करते हुए बताया कि मृतक की पहचान जोसफ लुइस सेराओ जूनियर के रूप में हुई है। जोसफ मूल रूप से हवाई द्वीप का रहने वाला था और गायब होने से ठीक पहले वाशिंगटन में रह रहा था। परिजनों के मुताबिक, वर्ष 1998 के बाद से जोसफ का अपने परिवार से कोई संपर्क नहीं हुआ था और वे लगातार उसकी तलाश में भटक रहे थे। इस रहस्यमयी मामले की शुरुआत जुलाई 2000 में हुई थी, जब ओलंपिक नेशनल पार्क के सोल डक रिवर क्षेत्र में शोध कर रहे एक रिसर्चर को घने पेड़ों के बीच एक पुराना, जर्जर टेंट दिखाई दिया। जब उसने उत्सुकतावश टेंट के अंदर झांका, तो उसके होश उड़ गए। टेंट के भीतर एक स्लीपिंग बैग में इंसानी अवशेष सड़ चुके थे। सूचना मिलते ही पुलिस और फारेंसिक एक्सपर्ट्स की टीम मौके पर पहुंची, लेकिन शव इस कदर क्षत-विक्षत हो चुका था कि उसकी तत्काल पहचान करना नामुमकिन था। शुरुआती जांच में अनुमान लगाया गया कि मौत करीब छह महीने पहले हुई होगी। मौके से कोई पहचान पत्र, पर्स या ठोस सुराग नहीं मिलने के कारण यह मामला धीरे-धीरे अमेरिका के सबसे पेचीदा कोल्ड केस की फाइलों में बंद हो गया। लगभग 24 साल बाद, इस ठंडे पड़ चुके मामले में एक अभूतपूर्व मोड़ आया। एक मेडिकल एक्जामिनर आफिस ने आधुनिक डीएनए जांच का सहारा लेने का फैसला किया। इसके लिए एक एडवांस फारेंसिक जीनियोलाजी लैब को जांच का जिम्मा सौंपा गया। वैज्ञानिकों ने दशकों पुराने कंकाल के अवशेषों से बेहद सावधानीपूर्वक डीएनए निकाला और संभावित पारिवारिक कड़ियों की तलाश शुरू की। महीनों की जटिल जेनेटिक मैपिंग और कड़ी मेहनत के बाद आखिरकार एक सटीक मैच मिल गया। इसके बाद आधिकारिक बयान जारी कर पुष्टि की गई कि वह शव जोसफ लुइस सेराओ जूनियर का ही था। अधिकारियों का कहना है कि अगर आधुनिक डीएनए तकनीक इतनी उन्नत न होती, तो यह रहस्य हमेशा के लिए जंगल की परतों में ही दफन रह जाता। हालांकि, पहचान उजागर होने के बावजूद सबसे बड़ा सवाल अब भी अनुत्तरित है कि आखिर जोसफ की मौत कैसे हुई प्रशासन ने अब तक मौत के वास्तविक कारणों, जैसे कि यह हत्या थी, कोई दुर्घटना थी या प्राकृतिक मौत, इसका खुलासा नहीं किया है।